

वैसे तो ये ग़लत है मगर मानने लगे
अब ऐब को ही लोग हुनर मानने लगे

देखा नहीं जिन्होंने भी गमलों से कुछ इतर
वे बोनसाई को ही शजर मानने लगे

सच्चाई मुंह छुपाती नज़र आयेगी मियां
झूठे को आप सच्चा अगर मानने लगे

जितना हसीं ज़मीन से दिखता है दोस्तो
सच में नहीं है वैसा क़मर मानने लगे

बीमारियां जो हो रही हैं लाइलाज अब
आलूदगी का है ये असर मानने लगे

परिवार धीरे-धीरे बिखरने लगे तो हम
सूनी इमारतों को ही घर मानने लगे

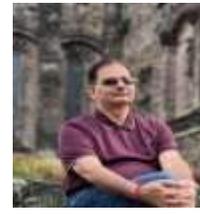
**रहता है उसका ज़िक्र सदा दास्तान में
कहता है बा-कमाल जो सादा ज़बान में**

मैं जी रहा हूँ दिल में ये उम्मीद पाल कर
आयेगी लौट कर खुशी मेरे मकान में

खुद के ही साथ रहने की फ़रसत नहीं मुझे
रहता हूँ रात-दिन मैं किसी इम्तेहान में

चारों तरफ़ ही खुशबुओं से भर गई फ़ज़ा
जाने हवा ने क्या कहा फूलों के कान में

कैसे मैं तेरा हो के रहूँ ऐ मेरी ग़ज़ल
दुनिया खड़ी है तेरे मेरे दरमियान में



अजय अज़ात

**बिन जले चरागों से रोशनी नहीं होती
दर्द के बिना यारो, शाइरी नहीं होती**

शाइरी में हम से तो मसखरी नहीं होती
झूठ की कभी हमसे पैरवी नहीं होती

ऊँगलियों या होठों का दोष कुछ रहा होगा
बांसुरी कभी यारो, बेसुरी नहीं होती

ख्वाहिशों का इक पंछी फड़फड़ाता रहता है
आँख बंद कर के भी, बंदगी नहीं होती

जाने कब चटक जाए कांच का खिलौना ये
पत्थरों से शीशे की दोस्ती नहीं होती

सिफ्र से शुरू हो कर सिफ्र पे सिमटना है
फिर भी इक तमन्ना है, खत्म ही नहीं होती

जाने क्यों हक़ीरी से देखते हैं सब इसको
मौत के बिना पूरी ज़िंदगी नहीं होती

मुद्दतों से गुम हूँ मैं अपनी ही तजस्सुस में
इक तलाश जारी है खत्म ही नहीं होती

लोग यूँ ही भरती के क़ाफ़िये मिलाते हैं
हम से तो ग़ज़ल से यूँ दिल्ली नहीं होती

लोग यूँ ही जलते हैं दूसरों की खुशियों से
हमसे तो 'अजय' ऐसे, खुदकुशी नहीं होती

फरीदाबाद